

पद १५

(राग: मिश्र काफी - ताल: भजनी)

यह है प्रभु का निज भवन। आकर्षित है जनगण का मन॥ध्रु॥
सृष्टि रचाई सुंदर उपवन। आए प्रभुजी जग उद्धारन॥१॥ पुण्य
भूमि यह दण्डीकावन। गुरु गंगा औ' विरजा संगम॥२॥ अत्रि
मनोहर बया अनुसूया। हनुमत प्रभु हरी त्रय अवतारन॥३॥
भक्तकार्य का जो कल्पद्रुम। गुरु योगी महाराज का त्रिभुवन॥४॥
अद्वैत अभेद और निरंजन। निरालंब निर्गुण परिपूरन॥५॥ देस
विदेसी सकलमती जन। पावे सदोदित प्रभु का दर्शन॥६॥ दुःख
सुख स्वार्थादी का चिंतन। छोड़ सिद्ध सह गाओ प्रभु गुण॥७॥